**हिंदी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष, पत्र-2**

'भारत-भारती' :- मैथिलीशरण गुप्त

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के काव्य आदर्शों को चरितार्थ करने वाले महान कवि मैथिलीशरण गुप्त हुए | उन्होंने लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों की रचना की है | ये हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं | इनके द्वारा लिखित अनुपम रचना 'भारत-भारती' का प्रकाशन सन 1912 ई० में हुआ जिसमें भारत के अतीत का गौरव व गान है | गुप्त जी की प्रथम रचना 'रंग में भंग' का प्रकाशन 1909 ई० में हुआ परंतु इनको प्रसिद्धि भारत-भारती (1912 ई० ) से मिली | भारत भारती ने हिंदी भाषियों में जाति, देश के प्रति गर्व और गौरवपूर्ण भावनाएं प्रबुद्ध की और यही कारण है की गुप्त जी राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध हुए |

'भारत-भारती' गुप्त जी द्वारा स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग है | देश की वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए वे भारत भारती में लिखते हैं -

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी / आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी" |

यह ग्रंथ तीन भागों में बटा हुआ है- अतीत खंड, वर्तमान खंड तथा भविष्यत् खंड |

भारत-भारती का अतीत खंड भारतवर्ष के इतिहास पर गर्व करने को पूर्णतः विवश करता है | गुप्तजी ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया है | भारत श्रेष्ठ था, है और सदैव रहेगा का भाव इन पंक्तियों में गुंजायमान है -

"भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहां ? / फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहां ? / संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ? / उसका की जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है | "

उस समय के दर्शन, धर्म-काल, प्राकृतिक संपदा, कला-कौशल ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक-व्यवस्था जैसे तत्वों को संक्षिप्त रूप में स्मरण करवाया गया है | इस खंड में निरपेक्षता को ध्यान में रखते हुए निंदा और प्रशंसा के प्रदर्शन हुए हैं, जैसे मुगल काल के कुछ क्रूर शासकों की निंदा हुई है तो अकबर जैसे मुगल शासक का बखान भी हुआ है | अविष्कार और आधुनिकीकरण के प्रचार के कारण अंग्रेजों की प्रशंसा भी हुई है |

"अनमोल आविष्कार यद्यपि है अनेकों कर चुके / निज नीति, शिक्षा, सभ्यता की सिद्धि का दम भर चुके / पर पीटते हैं सिर विदेशी आज भी जिस शांति को / ये हम कभी फैला चुके उसकी अलौकिक कांति को " |

वर्तमान खंड में दारिद्र्य, नैतिक पतन, अव्यवस्था और आपसी भेदभाव से जूझते उस समय के देश की दुर्दशा को दर्शाते हुए सामाजिक नूतनता की मांग रखी गई है | नैतिक और धार्मिक पतन के लिए गुप्तजी ने उपदेशकों, संत- महात्माओं और ब्राह्मणों की निष्क्रियता और मिथ्या-व्यवहार को दोषी मानते हुए उन पर शब्द प्रहार भी किया है |

"पांडित्य का इस देश में सब ओर पूर्ण विकास था / बस, दुर्गुणों के ग्रहण में ही अज्ञता का वास था / सब लोग तत्व ज्ञान में संलग्न रहते थे यहां / हां, व्याध भी वेदांत के सिद्धांत कहते थे यहां " |

भविष्यत् खंड में अपने ज्ञान, विवेक और विचारों की सीमा को छूते हुए गुप्तजी ने समस्या समाधान के हल खोजने का एक सफल प्रयास किया है |

"विख्यात चारों वेद मानो चार सुख के सार हैं / चारों दिशाओं के हमारे वे जय-ध्वज चार हैं / वे ज्ञान गरिमा यार है विज्ञान के भंडार हैं / पुण्य पारावार हैं आचार के आधार हैं /

'भारत-भारती' की रचना गुप्तजी ने क्योंकि इसका जवाब देते हुए वे भारत-भारती की प्रस्तावना में लिखते हैं -

"यह बात मानी हुई है कि भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अन्तर है। अन्तर न कहकर इसे वैपरीत्य कहना चाहिए। एक वह समय था कि यह देश विद्या, कला-कौशल और सभ्यता में संसार का शिरोमणि था और एक यह समय है कि इन्हीं बातों का इसमें सोचनीय अभाव हो गया है। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पद-पद पर पराया मुँह ताक रही है! ठीक है, जिसका जैसा उत्थान, उसका वैसा हीं पतन! परन्तु क्या हम लोग सदा अवनति में हीं पड़े रहेंगे? हमारे देखते-देखते जंगली जातियाँ तक उठकर हमसे आगे बढ जाएँ और हम वैसे हीं पड़े रहेंगे? क्या हम लोग अपने मार्ग से यहाँ तक हट गए हैं कि अब उसे पा हीं नहीं सकते? संसार में ऐसा कोई काम नहीं जो सचमुच उद्योग से सिद्ध न हो सके। परन्तु उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता होती है। इसी उत्साह को, इसी मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिए कविता एक उत्तम साधन है। परन्तु बड़े खेद की बात है कि हम लोगों के लिए हिन्दी में अभी तक इस ढंग की कोई कविता-पुस्तक नहीं लिखी गई जिसमें हमारी प्राचीन उन्नति और अर्वाचीन अवनति का वर्णन भी हो और भविष्य के लिए प्रोत्साहन भी। इस अभाव की पूर्त्ति के लिए मैंने इस पुस्तक को लिखने का साहस किया। "

नोट:- पाठ से संबंधित विस्तृत जानकारी आपको विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्री में

सम्मिलित है।

छात्र छात्राओं को निर्देश है कि वे वहां से पाठ से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त कर इसी तरह से पठन-पाठन कार्य जारी रखें।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक, हिंदी विभाग, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय।